

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 9 • अंक-2356 • उदयपुर, रविवार 06 जून, 2021 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया



समाचार-जगत्

सकारात्मक व जनहितार्थ खबरें



सेवा-जगत्

मानवता का प्रतीक, आपका सेवा संस्थान



नई तकनीक से अब चंद सेकंड में पता चल जाएगा मिट्टी की सेहत का हाल

मिट्टी की सेहत का हाल जानने के लिए अब लम्बा इंतजार नहीं करना पड़ेगा। भारतीय मृदा विज्ञान संस्थान भोपाल ने एक ऐसी तकनीक विकसित की है, जो चंद सेकंड में ही बता देगी कि मिट्टी में कौन से पोषक तत्वों की कमी या बहुलता है। इन्फ्रारेड स्पेक्ट्रोस्कोपी नामक इस तकनीक में 12 तरह की जांच कुछ ही सेकंड में हो जाएगी, जबकि प्रयोगशाला में पारंपरिक तरीके में एक तत्व की जांच में ही ढाई से तीन घंटे लगते हैं।

इन्फ्रारेड स्पेक्ट्रोस्कोपी से हो सकेगी 12 तरह के तत्वों की जांच : संस्थान के विज्ञानी पांच साल से विश्व कृषि वानिकी केंद्र नैरोबी (केन्या) के साथ मिलकर इस तकनीक पर काम कर रहे थे। इस दौरान प्रयोग के तौर पर दो हजार से अधिक नमूनों की जांच की गई। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद ने भी तकनीक की सराहना की है। रासायनिक उर्वरकों के अंधाधुंध प्रयोग और जैविक खाद नहीं डालने

से मिट्टी में पोषक तत्वों जैसे जिंक, कार्बन, आयरन, मैंगनीज, नाइट्रोजन, फास्फोरस जैसे तत्वों की कमी हो रही है। यही तत्व मिट्टी को उर्वर बनाते हैं और पैदावार में मदद करते हैं। ऐसे में उसकी सेहत पर नजर रखने में इन्फ्रारेड स्पेक्ट्रोस्कोपी प्रयोगशाला जांच का उत्तम विकल्प हो सकती है।

विश्व कृषि वानिकी केंद्र नैरोबी के साथ इस तकनीक पर काम किया जा रहा था। इस कड़ी में मध्य प्रदेश सहित देश के अन्य क्षेत्रों से मिट्टी के दो हजार से अधिक नमूने एकत्र किए गए। उनके भौतिक और रासायनिक गुणों की जांच की गई। विशेष मशीन केन्या से मंगाई गई, जबकि जांच के लिए अन्य संसाधन यहीं से जुटाए गए। पहले चरण में मिट्टी की उपजाऊ क्षमता, उसमें मौजूद तत्वों की स्थिति आदि की जांच की गई। इसके अच्छे परिणाम सामने आए। पारंपरिक तरीके में प्रत्येक तत्व की जांच में ना केवल ढाई से तीन घंटे का समय लगता है बल्कि इसमें अधिक खर्चा भी होता है। हालांकि, सरकारी लैब में इसकी मुत में जांच की जाती है। इन तत्वों की जांचरू कार्बन, नाइट्रोजन, फास्फोरस, पोटैश, मैंगनीज, रेत की मात्रा, लवणता, अम्लीयता, पीएच वैल्यू, मिट्टी की जल धारण क्षमता, टिकाऊपन आदि की जांच संभव है।



नारायण सेवा ने परिवार को काल के मुंह से निकाल लिया

उदयपुर जिले के आदिवासी क्षेत्र चारों का फलां निवासी मेधा (60) वृद्धावस्था में पत्नी के संग जीवन की गाड़ी खींच रहे थे। इकलौता बेटा अलग रहता था करीब 9 माह पूर्व बेटे की पत्नी अपने तीन मासूम बच्चों को छोड़कर अन्यत्र चली गई। अब वृद्धा दादा - दादी पर गृहस्थी की जिम्मेदारी आ पड़ी। लॉकडाउन में बेटे की मजदूरी छूट गई और मदिरापान की उसकी लत के चलते परिवार भूखमरी के मुहाने पर जा खड़ा हुआ, जहां ईश्वर के अलावा कोई दूसरा मददगार नजर नहीं आ रहा था।

ऐसे में एक दिन नारायण सेवा संस्थान की टीम गांव में गरीबों को राशन की मदद पहुंचाने के ध्येय से पहुंची तो स्थानीय लोगों में वृद्ध मेधा और तीन पोतों के उनसे मिलवाया। उनकी विकट स्थिति देखकर संस्थान में हर माह राशन सामग्री देने का फैसला लिया। नन्हें नन्हें बच्चों को वस्त्र एवं पोषाहार भी दिया गया।

मेधा ने कहा कि बुढ़ापे में पड़ोसियों और नारायण सेवा संस्थान ने मदद करके परिवार को काल के मुंह से निकाल लिया, मैं दिल से उनके लिए दुआ करता हूँ।

केन्या के 98 दिव्यांगों को कृत्रिम अंग



दिव्यांगजनों को कृत्रिम पांव एवं शूज पहनाते हुए डॉक्टर

मोम्बासा सिमेंट लिमिटेड के मैनेजिंग डायरेक्टर श्री हंसमुख भाई पटेल की प्रेरणा से नारायण सेवा संस्थान ने 23 अप्रैल 2021 को मोम्बासा में कृत्रिम अंग वितरण शिविर आयोजित किया। जिसमें 98 दिव्यांग बन्धु जो अंगविहीन थे उन्हें कृत्रिम अंग हाथ-पैर दिए। संस्थान अध्यक्ष प्रशान्त अग्रवाल ने बताया कि एसोसिएशन ऑफ फिजीकल डिसेबल्ड इन केन्या की टीम के डॉक्टर ने शिविर में आए दिव्यांगों को कृत्रिम अंग लगाए। इस दौरान जयेन्द्र हिरानी, रमेश भाई, नारायण भाई एवं उनकी टीम उपस्थित रहे एवं निःशुल्क सेवाएं दी।



शिविर में लाभान्वित दिव्यांगजनों परामर्श देते हुए



गंगा शहर निवासी गुवाहाटी प्रवासी लोढा परिवार ने पेश की मिशाल पुत्र की शादी में खर्च नहीं कर, दिव्यांगों के ऑपरेशन का लिया संकल्प नारायण सेवा संस्थान बनी प्रेरणा का स्रोत

बीकानेर। गंगाशहर निवासी व गुवाहाटी प्रवासी समाजसेवी मानमल लोढा ने अपने पुत्र नितेश लोढा की शादी को वृहद स्तर पर न करके एक नारायण सेवा संस्थान के माध्यम से दिव्यांग का ऑपरेशन करवाने का निर्णय लिया है। नारायण सेवा संस्थान बीकानेर के प्रेरक कमल लोढा ने बताया कि गुवाहाटी के व्यवसायी मानमल लोढा ने बताया कि उत्सव के अवसर अनेक मिल जाएंगे लेकिन इस विकट दौर में सेवा धर्म निभाना जरूरी है।

गौरतलब है कि नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर 4 लाख से ज्यादा दिव्यांग ऑपरेशन कर चुकी है। कोरोना काल में 50,000 परिवारों को अनाज का निःशुल्क वितरण किया।

मेरठ और परभणी में भी घर-घर भोजन सेवा



भोजन पैकेट बनाने में जुटी सेवादात्री साधक टीम

कोरोना संक्रमित परिवारों के सेवार्थ नारायण सेवा संस्थान के मुख्यालय पर शुरू हुई घर-घर भोजन सेवा की तर्ज संस्थान की शाखा मेरठ (यूपी.) और परभणी (महाराष्ट्र) में भी निःशुल्क भोजन सेवा 25 अप्रैल से शुरू हुई है।

शाखा परभणी की संयोजिका मंजु दर्डा के नेतृत्व में 1800 से अधिक पैकेट तथा मेरठ में मूलशंकर मेनारिया के सहयोग से 900 से ज्यादा भोजन पैकेट वितरित किए जा चुके हैं। अन्य शाखाओं में भी भोजन, राशन एवं दवाइयां आदि की निःशुल्क सेवा शुरू की जायेगी। यह सेवाएं कोरोना की दूसरी लहर की समाप्ति तक निरन्तर रहेगी पीड़ित मानवता को बचाना संस्थान का सर्वोपरि धर्म है।

एक वक्त के भोजन को भी मोहताज सारा परिवार, दुःखी रामदास को मिली मदद



मानवता को झकझोर देने वाली दर्द भरी दास्तां है गुप्तेश्वर के पास बिलिया गांव में रहने वाले रामदास वैष्णव की। रामदास वैष्णव कारीगर है, जो अन्य श्रमिकों की तरह रोज कमाते और खाते हैं! कोरोना में उनका काम बंद है। परिवार के 6 सदस्यों के सामने भूख को शान्त करना मुश्किल हो गया उन्होंने नारायण सेवा संस्थान से मदद की गुहार लगाई।

संस्थान ने उनकी मदद करते हुए एक माह का राशन प्रदान किया। रामदास

राशन पाकर संतुष्ट हुए ओर ईश्वर को धन्यवाद देते हुए उनकी आँखों से खुशी के आँसू छलक पड़े।

संस्थान अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल ने बताया कि ऐसे ही 12 अन्य गरीब मजदूर परिवारों को भी निदेशक वंदना अग्रवाल की टीम ने राहत पहुंचायी।

संस्थान जरूरतमंदों के घर-घर भोजन, दवाई और ऑक्सीजन सिलेंडर की निःशुल्क सेवाएं दे रहा है। जिससे हजारों लोग रोज लाभान्वित हो रहे हैं।



सम्पादकीय

'कर्म प्रधान विश्व करि राखा' का स्मरण आते ही कर्म गति के बारे में ध्यान आता है। कर्म अच्छे हों या बुरे उनका फल तो अवश्य ही मिलता है। कहा जात है कि कर्मों का संबंध केवल इसी जन्म तक सीमित नहीं है। ऐसा भी सुना है कि 'कर्म गति टारे नहीं टरे।' तो फिर कर्मों पर हमारा ध्यान इतना क्यों नहीं रहता जितना अपेक्षित है। यह तो तय है कि कारण होने पर ही कार्य होता है पर उस कारण पर हमारा कितना वश है? इन सब बातों का एक ही मार्ग है कि हम चाहे सिद्धांत रूप में कर्म के बारे में अधिक ज्ञान अर्जित करें या न करें पर कर्म करने में तो सजगता रखें ही। इस सजगता का परिणाम यह होगा कि हम कर्मबंधन या बुरे कर्म से बचते रहेंगे। इसका सरल सा उपाय यह भी हो सकता है कि हमारे द्वारा तकर्मों का समय-समय पर स्वयं ही विश्लेषण करते रहें। हम जो भी कर्म कर रहे हैं, क्या यही कर्म कोई दूसरा करता तो हमें शुभ लगता या अशुभ। यदि हमारी अनुभूति आती है कि अशुभ लगता तो हम इससे तुरंत बचें। शुभ या अशुभ कभी-कभी प्रासंगिक हो सकता है पर ज्यादातर तो सर्वमान्य ही होता है। इसलिये किसी भी कर्म या क्रिया से पूर्व स्वानुभव को संयोजित करना हमारे लिये लाभदायी ही होगा।

कुछ काव्यमय

जो चलता, चलता जाता है।
कहते हैं कि वही एक दिन
अपनी वह मंजिल पाता है।
जिसने हिम्मत नहीं हारी है।
वह सत्वर चलता जायेगा,
होना सफल कहाँ भारी है।
मन में धुन यह बनी रहे।
मुझे सफल होना ही है अब,
संकल्पी मुट्ठी है तनी रहे।

- वरदीचन्द्र राव, अतिथि सम्पादक



नहीं, तकनीक, विज्ञान और अन्य क्षेत्रों के वैश्विक ढांचे में भी बदलाव हुए हैं। इसमें सबसे ज्यादा आश्चर्य की बात यह है कि हम किस तरह इन बदलावों के साथ चल रहे हैं। पिछले कई वर्षों से स्वास्थ्य के इंफ्रास्ट्रक्चर को ऑनलाइन प्लेटफार्म पर लाने के जबरदस्त प्रयास चल रहे हैं और कोविड-19 के दुनिया भर में बढ़ते मामलों ने सभी अर्थव्यवस्थाओं को अपने स्वास्थ्य इंफ्रास्ट्रक्चर को मजबूत करने के लिए मजबूर किया है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन की ग्लोबल स्ट्रेटेजी ऑन डिजिटल हेल्थ 2020-2024 रिपोर्ट बताती है सब जगह, सब आयु वर्ग और सब के लिए स्वस्थ जीवन और जीवनशैली को प्रोत्साहित करना इसका मुख्य उद्देश्य है। 2019 में जारी यह रिपोर्ट कहती है कि सभी देशों में स्वास्थ्य सुविधाओं को आगे बढ़ाने और सहायता करने तथा सस्टेनेबल डेवलपमेंट गोल को प्राप्त करने में डिजिटल हेल्थ सहायक रहेगी।

यह स्वास्थ्य को बेहतर करने तथा बीमारियों को रोकने में भी सहायक रहेगी। इसी को देखते हुए रिपोर्ट में यह सुझाव दिया गया था कि इसकी संभावनाओं का पूरा इस्तेमाल करने के लिए राष्ट्रीय या क्षेत्रीय डिजिटल स्वास्थ्य प्रयास एक मजबूत रणनीति के तहत किये जाने चाहिए। इस रणनीति में वित्तीय, संगठनात्मक, मानवीय और तकनीकी संसाधनों का समावेश होना चाहिए।

इस रणनीति पर विचार और काम करते हुए कई देशों ने डिजिटल स्वास्थ्य रणनीतियों को तेजी से लागू करना शुरू किया है। इसी तरह की एक रणनीति भारत सरकार ने विकसित की है जिसे राष्ट्रीय डिजिटल स्वास्थ्य मिशन कहा गया है।

दिव्यांगों को सक्षम, सशक्त और प्रोत्साहित करेगा राष्ट्रीय डिजिटल स्वास्थ्य मिशन

-लेखक श्री प्रशान्त अग्रवाल नारायण सेवा संस्थान अध्यक्ष

कोविड-19 एक तूफान की तरह आया है और इसके कारण अचानक जो बदलाव हुए हैं, उन्होंने पूरी दुनिया को थोड़ा और आधुनिक बना दिया है। सिर्फ फार्मसी ही

राष्ट्रीय डिजिटल स्वास्थ्य मिशन का मुख्य उद्देश्य एक ऐसा मजबूत डाटाबेस तैयार करना है जिसमें समावेशी स्वास्थ्य इंफ्रास्ट्रक्चर को शामिल किया जाएगा। इसके जरिये ऐसे पहचान पत्र तैयार किए जाएंगे जिनसे देश के प्रत्येक व्यक्ति को बाधारहित स्वास्थ्य सेवाएं मिलती रहें। हालांकि स्वास्थ्य के इंफ्रास्ट्रक्चर को बेहतर बनाने के गम्भीर प्रयास किए गए हैं लेकिन दिव्यांगों को बाधारहित स्वास्थ्य सेवाएं प्राप्त करने में आज भी कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।

दिव्यांगों के सामाजिक समावेशन के विचार को ध्यान में रखते हुए राष्ट्रीय डिजिटल स्वास्थ्य मिशन दिव्यांगों को इस तरह सक्षम, सशक्त और प्रोत्साहित करेगा कि वे अपनी मनचाही स्वास्थ्य सेवाएं मांग सकें और प्राप्त कर सकें। मिशन को इस तरह बनाया गया है कि यह सभी के लिए बिना भेदभाव का एक ही तरह का प्लेटफार्म उपलब्ध कराएगा और स्वास्थ्य पहचान पत्रों के जरिये सामाजिक समावेशन करेगा। इससे हर व्यक्ति और दिव्यांग का अलग ई-रेकॉर्ड तैयार हो सकेगा। अब बड़े संस्थानों ने अपनी बाहे खोल दी हैं और दिव्यांगों को अपने यहां काम दे रहे हैं क्योंकि अब ऐसे कई कौशल आधारित कार्यक्रम उपलब्ध हैं जो दिव्यांगों को काम के लिए तैयार कर देते हैं।



महत्वपूर्ण बात यह है कि उनके पास अपनी स्वास्थ्य रिपोर्ट रहेगी जिससे ये संस्थान अपने कैंडिडेट चुनते समय अपनी जरूरत के हिसाब से निर्णय कर सकेंगे। नारायण सेवा संस्थान वर्षों से इस तरह के सफल प्रयास कर रहा है जिससे इन दिव्यांगों को उसी तरह का वातावरण मिल सके जो मुख्य धारा के कैंडिडेट्स को मिलता है।

नारायण सेवा संस्थान इन दिव्यांगों को कौशल विकास का प्रशिक्षण देने से लेकर एक बेहतर जीवनशैली का अवसर देने तक का प्रयास कर रहा है। यहां इनकी क्षमताओं को बढ़ा कर उन्हें जीवन के हर क्षेत्र की चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार किया जा रहा है। राष्ट्रीय डिजिटल स्वास्थ्य मिशन में इन दिव्यांगों के ई-रेकॉर्ड होंगे जिससे सरकार को इन्हें दिए जाने वाले उपचार के बारे में भविष्य की योजनाएं बनाने में मदद मिलेगी और ये लोग मुख्य धारा के वातावरण के लिए तैयार हो सकेंगे।

राष्ट्रीय डिजिटल स्वास्थ्य मिशन के लागू होने के बाद दिव्यांगों के लिए कई सकारात्मक पहल होती दिखेगी। इनमें किफायती जैविक उत्पाद और उपचार शामिल होंगे। इसके जरिए उन नई तकनीकों को भी बढ़ावा मिलेगा जो दिव्यांगों के उपचार के लिए जरूरी सामान देश में ही तैयार हो सकेगा।

राष्ट्रीय डिजिटल स्वास्थ्य मिशन पूरे स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र को साथ लाकर दिव्यांगों को सक्षम, सशक्त और प्रोत्साहित करेगा ताकि वे अपनी मनचाही स्वास्थ्य सेवा मांग और प्राप्त कर सकें। यह मिशन नए उभरते हुए उद्यमियों और स्टार्टअप्स या घरेलू व्यवसायों को दिव्यांगों के लिए उपयोगी किफायती और आसानी से उपलब्ध उत्पाद व स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करने के अवसर निश्चित रूप से प्रदान करेगा। नारायण सेवा संस्थान सरकार द्वारा किए जा रहे प्रयासों की सराहना करता है और इसके उददेश्य का पूरी तरह समर्थन करता है, क्योंकि इससे ना सिर्फ पूरे स्वास्थ्य ढांचे को बदलने में मदद मिलेगी, बल्कि देश में स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करने में पारदर्शिता भी आएगी।

साधना का मार्ग अनुभव से होकर जाता है

प्रत्येक व्यक्ति सुख-दुख का दायित्व दूसरों पर डालता है। चाहे सम्राट हो या अन्य कोई। सब अपने-आपका बचाव करते हुए दायित्व दूसरों पर डाल देते हैं। सारा दोष दूसरों में देखते हैं, स्वयं निर्लिप्त रह जाते हैं। किन्तु अध्यात्म की साधना करने वाला, चेतना के जागरण की साधना करने वाला, सारा दायित्व अपने पर लेता है। चाहे वह सुख का दायित्व हो या दुख का, वह दायित्व अपने पर लेता है, दूसरे पर नहीं थोपता।

व्यक्ति अध्यात्म से चेतना में प्रवेश करता है, अध्यात्म की चेतना के जागरण का प्रयास करता है, वह अपने पर बहुत उत्तरदायित्व लेता है। इतना बड़ा दायित्व नहीं उठाता। एक पूरे साम्राज्य को चलाने वाला सम्राट पर भी उतना बड़ा दायित्व नहीं होता, जितना बड़ा दायित्व होता है उस साधक पर, जो चेतना के जागरण में लगा हुआ है। अब सवाल है कि एकांत में, एक कोने में बैठकर अपने भीतरझांकनेवाला, अपने-आपकी साधना करने वाला बड़ा दायित्व कैसे लेता है? यह तर्क-संगत नहीं है, किन्तु विरोधी बात है। साधना का मार्ग तर्क का मार्ग नहीं है, अनुभव का मार्ग है, देखने का मार्ग है, दर्शन का मार्ग है, अध्यात्म का साधक दायित्व को ओढ़कर भारी रहता है, वह दायित्व दूसरों पर कभी नहीं डालता। अध्यात्म साधना की पहली परिणति है-दायित्व को लेने का साहस, अध्यात्म से भ्रांतिया सबसे टूटती है, वह असत्य से दूर और सत्य के निकट होता है। सामान्यता आँखें बंद करने का अर्थ होता है-नहीं देखना, सो जाना, लेकिन साधक के लिए आँखें बंद करने का अर्थ होता है- भीतर गहराईयों को देखना। कोई शत्रुता करता है, तो साधक सोचता है कि कहीं न कहीं मेरी भूल है। हम भी भाव अपना लें तो दुःखों को अनुभव ही नहीं होगा।

